संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। **''क्रिसमस''** यह ''देने का मौसम'' है। यह एक ऐसा दिन है जो हमें याद दिलाता है कि हमारे स्वर्गीय पिता ने हमें एक अद्भुत उपहार के रूप में अपने बेटे, ''यीशु'' को दिया, जो स्वेच्छा से इस दुनिया में हम पापियों के खातिर मरने के लिए आए थे। इसलिए आइए हम इस खुशी का प्रसार करें और बिना शर्त के देने की परंपरा को मनाएं!

'इम्मानुएल'– क्या कारण है की वह इस दुनिया में आएं ? **ऊँचा उठाने के लिए, केवल** उन लोगों को जो **प्रभु** पर भरोसा, प्यार, भय, और पूर्ण विश्वास रखते हैं!

मीका 5: 2 ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन् अनादि काल से होता आया है।'' बैतलहम एप्राता एक छोटासा जाना हुआ स्थान था, जो सचमुच अस्तित्वहीन था और जिसे कोई भी देखने नहीं जाता था। लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह ने उस अयोग्य जगह को इस दुनिया में आने के लिए चुना। तब से, वह स्थान जिसके बारे में किसी ने परवाह भी नहीं किया था, सभी देशों के बीच गौरवशाली बन गया। तब से हमेशा के लिए, उस छोटी सी जगह की रोशनी दुनिया के कोने–कोने में फेल गई।

इसी तरह, हमारे जीवन भी इस दुनिया के लोगों के लिए बेकार दिखाई दे सकते हैं। वे हमें छोटे या सचमुच उनकी दृष्टि में कुछ भी नहीं मानते होंगे। लेकिन जब से ''इम्मानुएल'' हमारे जीवन में आएं है, लोग हमें जानने लगे हैं और हमें पहचानने लगे हैं।

जब ''इम्मानुएल'' आपके जीवन में आते है, तो वह आप से क्या चाहते है:

- ✓ वह चाहते है कि आपका जीवन दूसरों के लिए एक गवाही हो।
- ✓ वह चाहते है कि आपके जीवन को बेतलेहेम एप्रताह के तरह आशीष मिले।
- ✓ वह आपके जीवन को बदलने और आपके जीवन को योग्य और कीमती बनाने की इच्छा रखत है।

यही कारण है कि परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु को इस दुनिया में भेजा। वह आपको बदलने के लिए आएं थे और जिस तरह से लोग आपको देखते हैं। वह आपको दुनिया के लोगों की नजरों में उठाने के लिए आएं थे ताकि वे आपको देखें और हमारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें!

प्रभु अलग–अलग तरीकों से हमसे कहते हैं कि ''जब मैं तुम्हारे साथ बनके रहूँगा, तो तुम धन्य हो जाओगे। तुम मेरे साथ सभी चीजें कर सकते हो। मैं तुम्हें ऊंचा और ऊंचा उठा सकता हूं।'' जब परमेश्वर हमारे साथ है, तो हम मनुष्य की कल्पना से परे काम कर सकते हैं। लेकिन जब परमेश्वर हमारे साथ नहीं होते है, तो एक साधारण सी बात भी हमारे लिए बोझ की तरह लगती है। यूहन्ना 14: 21– 23 ''21 जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।" 22 उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, "हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहता है और संसार पर नहीं?" 23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।'' जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं और स्वीकार करते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, और उनसे प्रेम करते हैं, तो वह हमारे जीवन में स्वयं को प्रकट करेंगे और हम अपने जीवन में यीशु मसीह के साथ–साथ पिता परमेश्वर की उपस्थिति को भी महसूस करेंगे।

इसलिए, प्रिय भाइयों और बहनों, आज **''इम्मानुएल''** को अपने जीवन में प्रवेश करने की अनुमति दें। अपने दिल के दरवाजे खोलें और यीशु मसीह को प्रवेश करने की अनुमति दें। वह इंतजार कर रहे है और आज आपके दिल के दरवाजे पर दस्तक दे रहे है। आपके दिल के दरवाजे का ताला भीतर से है, इसे खोलें और यीशु को अंदर आने दें!

''क्रिसमस'' का सही अर्थ है जब हम अपने जीवन में तीनों की उपस्थिति अर्थात् पिता परमेश्वर, उनके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा का आनंद लेते हैं, तभी हमारा जीवन **धन्य होगा!**

क्रिसमस की शुभकामनाएं और सभी को नया साल मुबारक हो!

पास्टर सरोजा म।

क्रिसमस का सुगंध्रव।

क्रिसमस का सुगंध्रव क्या है? क्रिसमस की आशा क्या है? क्रिसमस का अर्थ है हम सभी के लिए 'खुशी का दिन'। यीशु मसीह हमारा प्रभु, आपके और मेरे जैसे इंसान के रूप में पैदा हुए थे, इसीलिए यह हम सभी के लिए 'खुशी का दिन' है। 1 तीमुथियुस 3:16 कहता है ''इसमें सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात् , वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।'' यह क्रिसमस के लिए हमारी खुशी का रहस्य है। हमारे लिए क्रिसमस की खुशी को समझना बहुत जरूरी है। हां, इसका कारण यह है कि यीशु मसीह का जन्म एक शारीरिक रूप में, हमारी खातिर हुआ था। प्रभु शरीर में प्रकट हुए , आत्मा में धर्मी ठहरे, स्वर्गदूतों द्वारा देखे गए, अन्यजातियों में प्रचार किए गए, दुनिया पर विश्वास किए गए और महिमा में प्राप्त हुए। इस प्रकार, इस दुनिया में हम क्रिस्तियों को इस सत्य पर गर्व और खुशी होना चाहिए कि स्वर्ग और पृथ्वी बनाने वाले परमेश्वर, जो ऊपर स्वर्ग में रहते हैं, राजाओं के राजा, इस संसार में हमें 'खुशी' देने के लिए हमारे लिए नीचे उतरकर आए। इससे पहले कि वह इस दुनिया में पैदा हुए, कोई भी आदमी स्वर्ग के राज्य की उनकी महिमा को नहीं देख सकता था, उसे पृथ्वी पर भेज दिया गया था कि हम खुशी का अनुभव कर सकें। लेकिन उन्हें दुनिया में भेजा गया ताकि वह हमारे लिए परमेश्वर के राज्य का प्रचार कर सके और हमें बचाया जा सके। अलग–अलग तरीकों से यीशु ने हमें दुनिया में खुशी दी है, आइए हम पढ़ें मत्ती 1: 21, 23 ''21 वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'' वचन ''23 देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है – परमेश्वर हमारे साथ हैं।'' इम्मानुएल जो अनुवादित है, ''प्रभु हमारे साथ है।'' हमें हमारे पापों से मुक्ति दिलाने के लिए, हमारे प्रभु इम्मानुएल मनुष्य के रूप में इस धरती पर आए, ताकि वह हमारे करीब रह सकें।

नबी यशायाह कहते हैं यशायाह 9:6 ''क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।'' यीशु मसीह के इस दुनिया में जन्म लेने से बहुत पहले, नबी यशायाह ने यीशु मसीह के बारे में भविष्यवाणी की थी, कि वह हमारे लिए पैदा होंगे और उनका नाम मसीह जिसका अर्थ है 'आत्मा' से पैदा हुए थे, यीशु का अर्थ है 'हमें पापों से छुड़ाना', इम्मानुएल का अर्थ है 'प्रभु हमारे साथ है'। हमारा प्रभु इतना अच्छा, पराक्रमी और सर्वोच्च है, वह जो स्वर्गीय राज्य में

रहते थे और आपके और मेरे लिए इस दुनिया में भेजे गए थे। आइए देखें कि इस संसार में यीशु मसीह हमारे बीच कैसे रहे। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही वह कहता है यूहन्ना 1:14 ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।'' हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर शरीर में प्रकट हुए , आत्मा में धर्मी ठहरे, स्वर्गदूतों द्वारा देखे गए, अन्यजातियों में प्रचार किए गए, दुनिया पर विश्वास किए गए और महिमा में प्राप्त हुए। लेकिन **'वचन'** के माध्यम से इस दुनिया में हमारे साथ रहना जारी है। प्रभु यीशु मसीह स्वयं जीवित वचन है, जब हम इस सत्य को जानेंगे तो हम अपने सभी पापों से मुक्त हो जाएंगे। इसलिए, दुष्ट शत्रु हम से **'वचन'** को चुराने की कोशिश करता है। यीशु मसीह आज अपने वचन के माध्यम से हमसे बात करते है, वह हमें इस दुनिया में अपने पिता परमेश्वर की महिमा दिखाने के लिए आये थे। आइए हम पढ़ें लूका 1: 78–79 ''78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा; जिसके कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा, 79 कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पाँवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।'' इस प्रकार जो लोग इस वचन को स्वीकार करते हैं और वचन के अनुसार जीते हैं, वे स्वर्गीय पिता परमेश्वर को स्वीकार करते हैं। जैसा कि हम आज क्रिसमस मनाते हैं, हमें यीशु मसीह और वचन को भी स्वीकार करना चाहिए। जब हम यीशु मसीह को जानना चाहते हैं, तो बदले में हम पिता परमेश्वर को जानना चाहते हैं। इस प्रकार, हम मिलकर स्वर्ग की खुशी का आनंद लेंगे। यीशु मसीह के माध्यम से हम दुनिया के प्रकाश को प्राप्त करते हैं, जब हम प्रभु के साथ मिलकर चलते हैं और उनके वचन के आज्ञाकारी होते हैं, हम यीशु मसीह को हमारे जीवन में एक प्रमुख स्थान देते हैं। जब हम यीशु मसीह से प्यार करते हैं और बदले में उन्हें एक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं तो हम अपने जीवन में पिता परमेश्वर को पहला स्थान देते हैं। वह घर जो यीशु मसीह का स्वागत करता है और उन्हें उनके जीवन में पहला स्थान देते है, वह घर प्रभु का निवास स्थान बन जाता है और स्वर्ग जैसा हो जाता है। तो, हमारे घरों में प्रभु के रहने का क्या कारण है, जब हम अपने घरों में स्वर्ग के प्रकाश को स्वीकार करते हैं, तो सभी अंधकार दूर हो जाते हैं और हमारे जीवन प्रभु की रोशनी से जगमगा उठते हैं।

आइए हम फिर से पढ़ें लूका 1: 78–79 ''78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा; जिसके कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा, 79 कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पाँवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।'' इस प्रकार, जब हम यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं तो हम उस प्रकाश को स्वीकार करते हैं जो स्वर्गीय राज्य से नीचे आया है। हमने नाम के अर्थों को देखा है .. जैसे की , यीशु, मसीह, इम्मानुएल नबी यशायाह द्वारा, लेकिन यीशु 'दुनिया की रोशनी' जब वह हमारे घरों में चमकते है, तो सभी अंधेरे भाग जाते हैं और उस घर में कोई आत्मारिक मृत्यु नहीं होगी। हमें कभी–कभी आश्चर्य होता है कि हम कैसे परिपूर्ण हो सकते हैं, हम परमेश्वर से कैसे प्रेम कर सकते हैं और उनके वचन के प्रति कैसे आज्ञाकारी हो सकते हैं, कैसे उनके साथ लगन से चल सकते हैं? हम में से बहुत से लोग उनके वचन के आज्ञाकारी नहीं हो सकते है और न ही उनकी आज्ञाओं को मान सकते हैं? इसलिए, हम कैसे आज्ञाकारी हो सकते हैं जो प्रभु हमसे बात करते हैं। आइए हम हनोक के जीवन को पवित्र ग्रंथ में देखें, वह आपके और मेरी तरह गृहस्थ व्यक्ति था, जिसके बच्चें थे, रिश्तेदारों के साथ एक परिवार था। लेकिन वह प्रभु परमेश्वर के साथ–साथ चलता था। वह अपने जीवन में किसी भी अन्य से अधिक प्रभु से

प्यार करता था। परमेश्वर ने हनोक से आमने–सामने बात की। हनोक ने यहोवा का भय माना। इस प्रकार वह धन्य हो गया। हमें, परमेश्वर को अपने जीवन में पहला स्थान देना मुश्किल लगता हैं, हमारे लिए यह हमेशा हमारे परिवार, दोस्तों और समाज को प्राथमिकता देते है। हम प्रभु की आज्ञा को नहीं रखते हैं और न ही हम उनके कानूनों के अनुसार चलते हैं। यह हमें अंधेरे से अधिक अंधेरे में ले जाता है क्योंकि हम दुनिया और इसके गलत कामों को गले लगाते हैं। हमारा परमेश्वर, स्वर्गीय प्रकाश है जो इस दुनिया में हर अंधेरे को दूर करने के लिए आये है और हमारे ऊपर अपनी रोशनी डालकर हमें चमक और खुशी से भर देते है। लेकिन, हमारे जीवन में अभी भी अंधेरा क्यों है? क्योंकि हमने इस प्रकाश को अपने जीवन में स्वीकार नहीं किया है। हनोक की तरह कोई न था, जो विश्वास में परिपूर्ण था और प्रभु से प्यार करता था और परमेश्वर के साथ निकटता से चलता था। उत्पत्ति 5: 22 ''मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियाँ उत्पन्न हुईं।'' अपने पेहलोटे जन्म के बाद, हनोक प्रभु को जानता था और उसने प्रभु को अपने जीवन में पहला स्थान दिया, उसके बाद उसका परिवार बढ़ता गया और उसने 300 वर्षों तक प्रभु के साथ चलना जारी रखा। क्या प्रभु के लिए कुछ भी कठिन है, प्रभु के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। इस प्रकार विश्वास की पुस्तक में, हनोक के नाम का पहला उल्लेख है। हमें क्रिसमस का आनंद दुनिया के तरीकों से कभी भी नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें यीशु मसीह की सच्ची भावना के साथ क्रिसमस का आनंद लेना चाहिए। इस प्रकार, क्रिसमस की असली भावना है 1 तीमुथियुस 3: 16 कहता है ''इसमें सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात् , वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।'' यहाँ प्रभु परमेश्वर, हमें अपने महान प्रेम को दिखाते है, वह शरीर में प्रकट हुए , आत्मा में धर्मी ठहरे, स्वर्गदूतों द्वारा देखे गए, अन्यजातियों में प्रचार किए गए, दुनिया पर विश्वास किए गए और महिमा में प्राप्त हुए। क्रिसमस का सही अर्थ है ''आत्मा द्वारा जन्मा, जो हमें स्वर्गदूतों द्वारा दिखाए गए, नाश होते लोगों के लिए मुक्ति का उपदेश दिया और अंत में महिमा में उठा लिए गए।'' यीशु ने कभी किसी के चेहरे को देखकर अपना निर्णय नहीं दिया, बल्कि उन्होंने उनके दिलों को देखा। इस प्रकार वह आत्मा में धर्मी थे। वह हमेशा मनुष्यों पर अपने फैसले की घोषणा करने के लिए आत्मा से नेतृत्व करते थे। हमें भी कभी किसी मनुष्य को उनके चेहरे पर से निर्णय नहीं करना चाहिए, हमें भी अपना फैसला धार्मिकता के तरीके से करना चाहिए। नबी शमूएल इस्राएल के लिए एक नए राजा की तलाश में था, इसलिए वह अपनी बुद्धि से एक नए राजा की तलाश में पूरे इस्राएल में गया। वह इस्राएल का उत्तराधिकारी होने के लिए बुद्धिमान, दीर्घजीवी और सुंदर पुरुषों की तलाश करता रहा। लेकिन परमेश्वर ने पहले ही दाऊद को अगला राजा बनने के लिए तैयार कर लिया था और उसने शमूएल को दिखाया कि उसने दाऊद को इस्राएल का भावी राजा बनने के लिए पहले ही चुन लिया था। आइए हम पढ़ें 2 इतिहास 19: 5–7 ''5 फिर उसने यहूदा के एक एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया, 6 और उसने न्यायियों से कहा, "सोचो कि क्या करते हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे, वह मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा के लिये करोगे; और वह न्याय करते समय तुम्हारे साथ रहेगा। 7 अब यहोवा का भय तुम में बना रहे; चौकसी से काम करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा में कुछ भी कुटिलता नहीं है, और न वह किसी का पक्ष करता और न घूस लेता है।'' इस प्रकार, प्रभु परमेश्वर कहते हैं कि अपने फैसले में कभी भी पक्षपात मत करो। हमें हमेशा प्रभु के वचन का आज्ञाकारी होना चाहिए। विशेष रूप से, इस कलीसिया में, हमें परिश्रम करते हुए परमेश्वर के

वचन का पालन करना होगा। जो लोग परमेश्वर के वचन को स्वीकार करते हैं, वे धन्य होंगे और जो लोग वचन को स्वीकार नहीं करेंगे, उनके लिए इस कलीसिया के दरवाजे हमेशा बंद रहेंगे। क्रिसमस का सही अर्थ क्या है? हमारे यीशु मसीह इस धरती पर एक इंसान के रूप में पैदा हुए थे, प्रभु शरीर में प्रकट हुए , आत्मा में धर्मी ठहरे, स्वर्गदूतों द्वारा देखे गए, अन्यजातियों में प्रचार किए गए, दुनिया पर विश्वास किए गए और महिमा में प्राप्त हुए। यह क्रिसमस का सही अर्थ है, यह हमारे दिल में हमेशा के लिए होना चाहिए। हम पहले शायद क्रिस्ति होने का सही अर्थ नहीं जानते थे, लेकिन आज प्रभु ने हमें सच्चाई से रूबरू करवाया है और हमें अपने आप को सौभाग्य समझना चाहिए जो हम प्रभु के बच्चें हैं जिन्हें इस सत्य वचन को सुनने और इस दुनिया में बचाये जाने का अवसर मिला। आइए हम पढ़ें इब्रानियों 13: 5 ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, ''मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।'' हमारे लिए प्रभु का वादा है कि ''मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।'', फिर हम पहले दुनिया से क्यों प्रेम करें और प्रभु को त्याग दे। जब परमेश्वर हमसे प्यार करते है, तो हमारे जीवन से सभी अंधकार मिट जाते हैं। पैसा सभी बुराई की जड़ है, आज यह हमारे साथ है और कल यह दूसरों के साथ होगा। पवित्र शास्त्र में, हम उस विधवा की कहानी जानते हैं, जो जंगल में सूखी लकड़ियों की खोज में गई थी, ताकि वह अपने बेटे और स्वयं के लिए रोटी सेंक सके, दोनों इसे खाएंगे और फिर मर जाएं, क्योंकि वही सब उसके जीवन में बचा था। लेकिन यहाँ, हम देखते हैं कि कैसे प्रभु परमेश्वर ने अपने नबी एलिय्याह के माध्यम से उसका परीक्षण किया। विधवा को कौन बताता है ''पहले रोटी सेंक और मुझे खिला''। इसी तरह हमारे जीवन में दूसरे वचन को पूरा करने के लिए, हमें पूरी तरह से परमेश्वर की पहली आज्ञा का पालन करना चाहिए। इब्रानियों 13: 5 ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, ''मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।'' विधवा ने नबी की बात मानी और पहले उन्हें रोटी खिलाई और प्रभु के सेवक को खाना खिलाया। आश्चर्य कीजिये कि उसने अपने बेटे से क्या कहा होगा ''चलो हम दोनों पानी पीते हैं और बिस्तर पर सो जाते हैं, लेकिन हमें प्रभु के सेवक के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए, हमें उसे पहले खिलाना चाहिए''। प्रभु ने इस आज्ञाकारिता को देखा और विधवा के परिवार को आशीर्वाद दिया, इसके बाद उनके पास कुछ भी कमी न थी। परमेश्वर हमारी ओर से उसी आज्ञाकारिता की इच्छा करते है, वह प्रतिदिन वचन के द्वारा हमसे बात करते है। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमें उनके वचन के आगे झुकना चाहिए और इसे पूरी तरह से स्वीकार करना चाहिए, तभी हम अपने जीवन में उनके अत्यधिक आशीष को प्राप्त करेंगे। जीवित जल का जल प्रभु के सिंहासन से प्रत्येक घर में बहेगा जो उन्हें और उनके वचन में विश्वास करते है। आइए हम पढ़े मत्ती 24: 40–41 ''40 उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।'' हमारा प्रभु पक्षपात करनेवाला प्रभु नहीं है, जो भी प्रभु का यत्नपूर्वक पालन करता है, उनके लिए प्रभु का वचन यह है कि वह कभी भी उनका त्याग नहीं करेंगे। प्रभु जिसने न्यायाधीशों, याजकों, प्रचारकों, उपदेशकों को पक्षपात नहीं होने के लिए कहा है, क्या हमारा प्रभु पक्षपात करेंगे ? कभी नहीं ! तब परमेश्वर के लिए एक व्यक्ति को लेने और दूसरे व्यक्ति को छोड़ने का क्या कारण है, यह इसलिए है क्योंकि हम पहले वादे का पालन नहीं करते हैं, इस प्रकार दूसरा वादा हमारे जीवन में पूरा नहीं हो सकता है, ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, ''मैं तुझे कभी न

छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।'' हमारा प्रभु कभी न बदलनेवाला प्रभु है, वह हमें दिए गए अपने वादे से भी पीछे नहीं हटते । वह मनुष्य नहीं है, झूठ बोलने और अपने वचनों को बदलने के लिए।

गिनती 23: 20 कहता है ''देख, आशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैं ने पाई है : वह आशीष दे चुका है, और मैं उसे नहीं पलट सकता।'' प्रभु ने हमें पहले से ही आशीष दे दिया है, प्रभु ने हमें जो आशीष दिया है उसे कोई नहीं बदल सकता है। हमारे प्रभु का वादा है कि ''मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा'', क्या हमारा परमेश्वर अपने वचन से पलट सकते हैं, क्या वह हमें दिए गए वादे से मुकर सकते हैं? क्या कारण है, अगर दो एक साथ हैं तो एक को लिया जाएगा और दूसरे को वापस छोड़ दिया जाएगा? क्योंकि कई लोग दूसरे वादे का पालन करते हैं बिना पहले वादे को पूरा किये हुए और कई लोग पहले वादे को छोड़ देते हैं और उम्मीद करते हैं कि दूसरा वादा उनके जीवन में पूरा होगा। इस प्रकार, प्रभु एक को उठा लेंगे और दूसरे को छोड़ देंगे। वह वही न बदलनेवाला प्रभु है। हमारे लिए क्रिसमस का सही अर्थ जानना महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह हमेशा के लिए हमारे साथ रहने के लिए इस दुनिया में आएं, आज भी वह अपने वचन के माध्यम से हमसे बात करते है। उत्पत्ति 5: 24 ''हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।'' हम शायद विश्वास न करे कि जब यीशु कहते हैं कि ''जहां दो हैं – एक को ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा''। लेकिन शास्त्र में हमने पढ़ा है कि यह पहले भी हो चुका है। हनोक हर रोज परमेश्वर के साथ चलता था, उसने उससे आमने–सामने बात की, हनोक ने परमेश्वर का भय माना। और हाँ, वह परमेश्वर द्वारा उठा लिया गया था। मत्ती 24: 40–41 में जो कुछ हम ने पढ़ा हैं वह सच है, अंत समय में प्रभु परमेश्वर अपने धर्मी लोगों को भी इसी तरह से उठा लेंगे। यही कारण है कि प्रभु परमेश्वर आज हमारे साथ हैं, उनकी शक्तियों, पराक्रम, सामर्थ, को हमारे बीच दिखा सकते हैं। वह हमें अपना प्यार दिखते है और इस तरह जब वह हमें ताड़ना देते है, तो हमें बदलना चाहिए और सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए और इस दुनिया के पापों से खुद को अलग करना चाहिए। तभी हमें बचाया जा सकता है। इब्रानियों 11: 5 कहता है ''विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहले उसकी यह गवाही दी गई थी कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।'' इससे पहले कि वह उठा लिया गया था उसके प्रति यह गवाही थी, कि उसने प्रभु को प्रसन्न किया। जब हनोक इस दुनिया में था, तब लोग जानते थे कि वह परमेश्वर के साथ परिपूर्ण था और परमेश्वर का भय मानता था। इस प्रकार, यह प्रभु द्वारा उठाए जाने के बाद नहीं था कि लोगों को इस सच्चाई का एहसास हुआ। इस प्रकार, हमें भी प्रभु से प्यार करना चाहिए, विश्वास करना चाहिए और उस पर भरोसा करना चाहिए, आत्मा की धार्मिकता में चलना चाहिए और हमेशा प्रभु की इच्छा को पूरा करना चाहिए। हमें अपने जीवन को प्रभु की इच्छा के अनुसार ढालना चाहिए, अपने घुटनों को उसके सामने झुकाना चाहिए। हमारी मुसीबतें, परीक्षण और क्लेश केवल उतना ही होगा जितना कि हम इस दुनिया में सहन कर सकते हैं। वह हमारी सीमाओं को जानते है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रभु परमेश्वर के लिए खड़े हों, जितना हम कर सकते हैं और हर मिनट यह कोशिश होनी चाहिए। जितना अधिक हम वचन के प्रति प्रयत्नशील रहने की कोशिश करेंगे, उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, सच्चाई के रास्ते पर चलेंगे, उतना ही प्रभु हमें उनके करीब आने में अधिक मदद करेंगे। जब हम उनकी ओर एक कदम बढ़ाएँगे, तो वह हमारी ओर दस कदम बढ़ाएंगे। हमारे प्रभु ने हमसे पहले ही

वादा किया है कि ''वह हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही हमें त्यागेंगे''। वह हमेशा हमारे लिए रहेंगे, जब हम कमजोर होंगे तो वह हमें मजबूत करेंगे, जब हम गिरेंगे तब वह हमें उठाएंगे। वह हमारी हर मुसीबत में हमारी मदद करेंगे।

आइए हम पढ़ें याकूब 4: 8 ''परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो।'' हमें हमेशा प्रभु के करीब आने की कोशिश करनी चाहिए, वह हमारे करीब आएंगे। लेकिन अगर हम उनसे दूर जाने की कोशिश करते हैं, फिर भी हमारे प्रभु में धैर्य है की वह हमारे लिए प्रतीक्षा करते हैं, ताकि हम उनके लिए फलदायी बने। वह उम्मीद करते हैं कि हम उन्हें इस साल या अगले या अगले साल फल देंगे। वह कभी भी हम पर आसानी से हार नहीं मानते। वह हम पर अपनी कृपा दिखाते है, वह हमारे लिए अपने परमेश्वर पिता के साथ हमारा पक्ष लेते है और हमारे जीवन में काम करने के लिए कुछ और समय मांगते है। यीशु अपने पिता से हमारे लिए समय मांगते हैं, वह कहते है कि ''मैं अपने लोगों के दिल को वचन से और अधिक खोदूंगा, और यह सुनिश्चित करूंगा कि वे परमेश्वर के राज्य के लिए फलदायी हों''। अगर मेरे लोग अपने पापी तरीकों से नहीं फिरेंगे और वचन नहीं सुनेंगे और आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे, तो मैं उन्हें जड़ से निकाल लूंगा और उन्हें आग में नष्ट कर दूंगा। ऐसे जीवन का क्या उपयोग होता है, जब हम प्रभु से दूर भागते हैं तो यह एक निरर्थक जीवन हो जाता है। हमें याद रखना चाहिए ''वह उन लोगों के करीब आएंगे जो उनके करीब आते हैं''। याकूब 4: 8 ''परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो।'' यीशु दृष्टान्त में बोलते है लूका 15: 20 में ''तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।'' बेटे ने केवल अपने पिता के करीब जाने का सोचा, पिता ने उसे देखा और उसे गले लगाने के लिए उसकी तरफ दौड़ा। इसी तरह, याकूब यह भी कहता है कि **''परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।''** आज, उसी वचन का यहाँ प्रचार किया गया है, जितना अधिक हम परमेश्वर के साथ निकट आने की कोशिश करेंगे उतना अधिक वह हमारे करीब आएंगे। 2 इतिहास 15: 2 कहता है ''और वह आसा से भेंट करने निकला, और उससे कहा, "हे आसा, और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन, मेरी सुनो, जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा।'' हमें अपने भीतर हमेशा प्रभु के करीब आने की इच्छा होनी चाहिए, उतना ही अधिक वह हमारे करीब आएंगे। हमारा प्रभु हमारे लिए सब कुछ कर सकते है, उनके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। लेकिन, मूर्ख वही होते हैं जो अपना विश्वास मनुष्य में रखते हैं। वचन कहता है **''इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।''** हमारे लिए प्रभु का वादा आज भी वही है, प्रकाशितवाक्य 3: 20 ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।'' प्रभु जो इस दुनिया में आएं, हमारे लिए एक शारीरिक रूप में आएं, ऐसा प्रभु जिसने वादा किया था कि वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा और न ही हमें त्याग देगा, आज भी हमसे बात करते है ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके

साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।'' जब हम इस दुनिया में डूब जाते हैं, तो हम कभी भी प्रभु की दस्तक नहीं सुन पाएंगे। इस प्रकार यदि हमारे कान हैं, तो आइए सुनें कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहती है। याद रखें, वह एक पक्षपात करनेवाला प्रभु नहीं है। जब हमारे पास पैसा होता है तो दुनिया हमारे साथ होती है, लेकिन जब पैसा खत्म हो जाता है तो दुनिया हमें छोड़ देती है।

लेकिन हमारा प्रभु एक सज्जन है, वह कभी भी हम से जबरदस्ती नहीं करेंगे, वह बाहर इंतजार करेंगे और दस्तक देंगे, अगर केवल हम दरवाजे को खोलते हैं और उसे अंदर आने देते हैं, तो ही वह अंदर आएंगे। वह हमारा प्रभु है जो हमारे सतानेवालों के सामने हमारे लिये मेज बिछाता है। इस तरह हमारे घरों में कुछ भी चीज के लिए कमी नहीं होगी, उनका आशीर्वाद हमारे जीवन में उमड़ पड़ेगा। यह क्रिसमस, हमें यीशु मसीह को प्रवेश करने के लिए दरवाजे खोलने हैं। वह आज हमारे दरवाजे पर इंतजार कर रहे है और दस्तक दे रहे है, ताला भीतर से है, उन्हें अंदर प्रवेश करने के लिए हमें अपने दरवाजे खोलने होंगे। दाऊद का अनुभव कहता है भजन संहिता 139 :17–18 ''17 मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है! 18 यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ।'' हमारे जीवन में भी हमें इसका अनुभव करना चाहिए जैसा कि दाऊद ने किया, हमें एक–एक करके अपने आशिषों को गिनना चाहिए, वे हमारे जीवन में असंख्य हैं। परमेश्वर आज भी अपने वचन के माध्यम से हमसे बात करते है। उनका प्रेम उनके वचन के माध्यम से ही प्रकट होता है। हमें हर वह ताड़ना लेना चाहिए जो प्रभु परमेश्वर हमें देते हैं। हमें अपने पापों को कभी नहीं छिपाना चाहिए, बल्कि जब हम अपने जीवन में सुधार प्राप्त करते हैं तो हम धन्य हो जाते हैं। हम उसके सामने केवल धूल हैं। परमेश्वर हमें अपने वचन और अग्नि के माध्यम से निरंतर शुद्ध करते है। जितना हम पाप करते हैं उसी माप पर प्रभु का न्याय हम पर नहीं आता है, अगर ऐसा होता तो हम कभी भी अपने प्रभु के सामने खड़े नहीं हो पाते। हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और हम पर तुरंत प्रभु की कृपा होगी। प्रभु हमारे सुधारनेवाले बने रहेंगे।

आइए हम पढ़ें यूहन्ना 14: 21, 23 ''21 जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।'' 23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।'' जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं और स्वीकार करते हैं, तो आज्ञाओं को बनाए रखें, उनसे प्यार करें, वह हमारे जीवन में प्रकट होंगे और हम अपने जीवन में यीशु मसीह के साथ–साथ पिता परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करेंगे। यह हमारे जीवन में क्रिसमस का सही अर्थ है जब हम पिता परमेश्वर और उनके पुत्र यीशु मसीह दोनों की उपस्थिति का आनंद लेते हैं। हमारा जीवन धन्य हो जाएगा!

यह संदेश सभी पाठकों के लिए एक आशीर्वाद हो ! प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।